गलत के बीच अंतर करने की क्षमता विकसित करता है। इसके अतिरिक्त, आध्यात्मिक शिक्षा तनाव और चिंता को कम करने में सहायक होती है, जिससे मानसिक शांति और संतुलन बना रहता है। यह युवाओं में सहिष्णुता, करुणा, ईमानदारी और सामाजिक जिम्मेदारी जैसे मूल्यों का विकास करती है। परिणामस्वरूप, वे न केवल अपने जीवन में सफलता प्राप्त करते हैं, बल्कि समाज के प्रति भी उत्तरदायी नागरिक बनते हैं। आज के आधुनिक और प्रतिस्पर्धात्मक युग में, जहाँ भौतिकवाद और मूल्यहीनता तेजी से बढ़ रही है, वहाँ आध्यात्मिक शिक्षा की आवश्यकता और भी अधिक बढ़ जाती है। यह व्यक्ति को आंतरिक शक्ति प्रदान करती है, जिससे वह जीवन की चुनौतियों का सामना धैर्य और विवेक के साथ कर सकता है। अतः यह निष्कर्ष निकलता है कि आध्यात्मिक शिक्षा केवल व्यक्तिगत विकास के लिए ही नहीं, बल्कि एक स्वस्थ, संतुलित और मूल्य-आधारित समाज के निर्माण के लिए भी अत्यंत आवश्यक है। इसे शिक्षा प्रणाली का अभिन्न अंग बनाया जाना चाहिए, ताकि आने वाली पीढ़ी नैतिक, संवेदनशील और जागरूक नागरिक बन सके।

15. सुझाव (Suggestions)

1. वर्तमान समय में शिक्षा प्रणाली को अधिक समग्र और मानवीय बनाने के लिए उसमें आध्यात्मिक तत्वों का समावेश अत्यंत आवश्यक है। सबसे पहले, शिक्षा प्रणाली में आध्यात्मिक विषयों को शामिल किया जाना चाहिए। इससे विद्यार्थियों को केवल ज्ञान ही नहीं, बल्कि जीवन के उद्देश्य, आत्मबोध और आंतरिक शांति का भी अनुभव होगा। आध्यात्मिक शिक्षा व्यक्ति को स्वयं के प्रति जागरूक बनाती है और उसे सही-गलत में अंतर समझने की क्षमता प्रदान करती है।

2. दूसरा महत्वपूर्ण सुझाव यह है कि विद्यालयों में योग एवं ध्यान का नियमित अभ्यास कराया जाए। योग और ध्यान न केवल शारीरिक स्वास्थ्य को सुदृढ़ करते हैं, बल्कि मानसिक तनाव को कम करके एकाग्रता और स्मरण शक्ति को भी बढ़ाते हैं। आज के प्रतिस्पर्धात्मक वातावरण में छात्र तनाव और चिंता का सामना करते हैं, ऐसे में योग और ध्यान उन्हें संतुलित और शांत रहने में सहायता करते हैं।

3. नैतिक शिक्षा को अनिवार्य बनाया जाना चाहिए। नैतिक मूल्यों के अभाव में शिक्षा अधूरी मानी जाती है। ईमानदारी, सहानुभूति, अनुशासन और जिम्मेदारी जैसे गुण व्यक्ति के चरित्र का निर्माण करते हैं। यदि विद्यालय स्तर से ही इन मूल्यों का विकास किया जाए, तो समाज में सकारात्मक परिवर्तन संभव है। अंत: इन सुझावों के माध्यम से शिक्षा केवल रोजगार प्राप्त करने का साधन न होकर, एक सशक्त और संस्कारित व्यक्तित्व के निर्माण का माध्यम बन सकती है।

****

सन्दर्भ ग्रन्थ सूची –

1. Swami Vivekananda विवेकानन्द, स्. (2006). *व्यक्तित्व का विकास*. रामकृष्ण मठ।
2. Swami Vivekananda विवेकानन्द, स्. (2006). *शिक्षा*. रामकृष्ण मठ।
3. Sri Ram Sharma Acharya शर्मा, श्. रा. (1998). *व्यक्तित्व विकास हेतु उच्चस्तरीय साधनाएँ*. अखण्ड ज्योति संस्थान।
4. Sri Ram Sharma Acharya शर्मा, श्. रा. (2005). *व्यक्तित्व परिष्कार की साधना*. युग निर्माण योजना, गायत्री तपोभूमि।
5. Jagadguru Shri Kripalu Ji Maharaj कृपालु जी महाराज, ज. (1955). *प्रेम रस सिद्धांत*. राधा गोविन्द समिति।
6. Swami Chinmayananda चिन्मयानन्द, स्. (2002). *गीता का ज्ञान (श्रीमद्भगवद्गीता व्याख्या)*. सेंट्रल चिन्मय मिशन ट्रस्ट।
7. Mahatma Gandhi गाँधी, म. क. (1951). *मानव निर्माण में शिक्षा का योगदान*. नवजीवन प्रकाशन।
8. Swami Sivananda शिवानन्द, स्. (2000). *जीवन निर्माण के सूत्र*. द डिवाइन लाइफ सोसाइटी।
9. Sarvepalli Radhakrishnan राधाकृष्णन, स. (1999). *आध्यात्मिकता और व्यक्तित्व विकास*. राजपाल एण्ड सन्स।
10. Syed Amjad Hussain हुसैन, स. अ. (2025). *बिहार और सूफीवाद*. राजमंगल प्रकाशन।

भारत में शिक्षक – शिक्षा की नवीन धारणा

डॉ.उमा बणिचुल

'शिक्षक' शब्द ' शिक्ष ' धातु से बना है इसका अर्थ सीखना/सिखाना है I शिक्षक शब्द का पर्यायवाची शब्द है– ' गुरू ', ' अध्यापक ' , 'मार्गदर्शक' , 'आचार्य' , 'शिक्षणकर्ता' , 'प्रशिक्षक' आदि I समाज निर्माण में गुरू की अहम भूमिका होता है I सही गलत पहचान करा कर दिशा दिखाकर मार्गदर्शक बना है I ज्ञान प्राप्ति के लिए मार्गदर्शक के रूप में शिक्षक की आवश्यकता अधिक है I विषय में पारंगत व्यक्ति ही उसी विषय का विश्लेषण अच्छे तरह से कर सकता है I विषय में पारंगत होने के लिए अध्ययनशील और गहरी समझ होना आवश्यक है I इस परिप्रेक्ष्य में स्वामी हर्षानन्द का कहना है कि – '' एक सतत अध्ययनशील विद्यार्थी ही एक सुयोग्य शिक्षक हो सकता है I ''[1] इस कथन के माध्यम से स्वामी जी ने सुयोग्य शिक्षकों के अध्ययनशीलता के बारे में दर्शाया है I एक आदर्श शिक्षक अच्छे और श्रेष्ठ गुणों से परिपूर्ण होता है I शिक्षक योजनानुसार समय का सदुपयोग करके विद्यार्थियों को सही शिक्षा, प्रेरणा, सहनशीलता व्यवहार में परिवर्तन तथा शुद्धता के साथ मार्गदर्शन प्रदान करें ताकि उनके भविष्य को उज्ज्वल बनाने के साथ एक बेह्तर इंसान बना सकें I स्वामी हर्षानन्द जी ने कहा है –'' उसे प्रभावी ढंग से इस ज्ञान को प्रदान करना चाहिए I विद्यार्थी की क्षमता के अनुरूप उसे अपनी शिक्षण पद्धति को परिवर्तन करने में बहुत सक्षम होना चाहिए एवं शुद्धता तथा पूर्णता के साथ पढ़ना चाहिए I परंतु इस प्रक्रिया में उसे प्रत्यक्ष रूप से शिक्षण की अपेक्षा मार्गदर्शन अधिक करना चाहिए I उसका उद्देश्य अपने छात्र के मन को प्रदीप्त करना होना चाहिए , न कि उसे रट्टू तोता बनाने का ''[2]इससे स्पष्ट होता है कि श्रेष्ठ गुणों युक्त अध्यापक ही आदर्श शिक्षक बन सकता है I क्रोध , अहंकार ,लोभ नकारात्मक सोच एवं कक्षा के लिए पारिश्रमिक भावना से हट कर नैतिकता से जुड़ते हुए शिक्षा प्रदान करना चाहिए स्वामी जी गुरू के बारे में कहा है कि -''उसमें विद्यार्थियों के कल्याण की सच्ची भावना होनी चाहिए I उनके साथ उनका संबंध कक्षा में पढ़ाने तक ही सीमित नहीं होना चाहिए I वास्तव में हमारे प्राचीन गुरू अपने शिष्यों को अपने स्वयं के बच्चों के समान ही समझते थे Iयह आदर्श आधुनिक भारतीय शिक्षकों के लिए भी अनुकरणीय है I''इस कथन शिक्षक का नैतिक एवं मानवीय गुणों दर्शाता है I ह्रदय की कमलता को जितने के लिए सुमधुर बाणी की आवश्यकता होती है I शिक्षक की बाणी बच्चों को प्रभावित करती है I कबीर जी की एक दोहा –

ऐसी बाणी बोलिए , मन की आपा खोय
औरन को शीतल करे,आपहुं शीतल होय II

इस बात पर ध्यान देते हुए शिक्षक को अपना हाव – भाव, बोलने का लहजा को नियंत्रण में रखते हुए छात्रों के साथ पेश आना चाहिए I जीवन को सार्थक बनाने के लिए जिस प्रक्रिया ज्ञान, कौशल और मूल्यों को प्रदान करने में सक्षम बनती है वह शिक्षा है Iशिक्षा ऐसा साधन है जो उज्ज्वल भविष्य को सुनिश्चित करती है I स्वतंत्रता के बाद देश के शिक्षाशास्त्रियों, राजनीतियों एवं विशेष व्यक्तिगण ने 'शिक्षक – शिक्षा' को नवीन रूप प्रदान करने के लिए प्रयास किए और कर रहे है I शिक्षक – शिक्षा की नवीन धारणा के निर्माण में विभिन्न कारकों साथ दिए हैं I अमेरिका के प्रसिद्ध शिक्षाशास्त्री किलपैट्रिक के अनुसार – ''सर्कस में काम करने वाले नाटों और पशुओं को प्रशिक्षण दिया जाता है,पर शिक्षकों को शिक्षा दी जाति है''[4]भारत की लोकतांत्रिय मान्यताओं के अनुकूलता बनाए रखने के लिए शिक्षक प्रशिक्षण की धारणा में परिवर्तन किया जाना चाहिए I भारत में शिक्षा के विभिन्न क्षेत्रों में सुधार करने के लिए प्रशिक्षण में सुधार करना आवश्यक है I शिक्षक – प्रशिक्षण तुलना में शिक्षक – शिक्षा अधिक व्यापक है I

रामकृष्णन कमीशन शिक्षक प्रशिक्षण धारणा में कहा है कि " सच्ची शिक्षा केवल कुछ पाठों को पढ़ना और स्मरण करना ही नहीं है, वरन जीवनयापन एवं उद्देश्यपूर्ण कार्य में भाग लेना भी है "[५] शिक्षक – शिक्षा जीवन के सब क्षेत्रों को प्रभावित करने के कारण कला/ विज्ञान शिक्षण के साथ डिजिटल उपकरणों और आधुनिक पद्धतियों उपयोग करना चाहिए I शिक्षा क्षेत्र में राष्ट्रीय शिक्षानीति 2020 एक क्रन्तिकारी बदलाव हुआ है I 10+2 संरचना के वदले नई शैक्षणिक सरंचना 5+3+3+4 लाया गया I ये 4 अवस्था है - फाउंडेशनाल स्टेज,प्रिपरेटरी स्टेज, मिडिल स्टेज एवं सेकेंडरी स्टेज I फाउंडेशनाल स्टेज में प्री – स्कूल/ अंगनवाड़ी/ बालवाटिका के साथ कक्षा 1,2 को मिलाया गया I इस अवस्था 3 से लेकर 8 आयु तक बच्चों के लिए है I प्रिपरेटरी स्टेज में 3 से लेकर 5 कक्षा तक रखा गया I इस अवस्था में 8 से लेकर 11 आयु तक बच्चों के लिए है I मिडिल स्टेज 6 से लेकर 8 कक्षा तक रखा गया I इस अवस्था में 11 से लेकर 14 आयु तक बच्चों के लिए है I सेकेंडरी स्टेज 9 से लेकर 12 तक रखा गया I इस अवस्था में 14 से लेकर 18 आयु तक बच्चों के लिए है I प्राथमिक शिक्षा में मातृभाषा या स्थानिय भाषा उपयोग किया क्या I व्यावसायिक शिक्षा पर बल दिया गया I परीक्षा के बजाय समझ और व्यवहारिक ज्ञान को बताया गया I आब स्कूल स्तर पर कला, विज्ञान और वाणिज्य के बीच कड़ी विभाजन रेखा नहीं होगी I छात्रों बहु विषयों से अपना चयनित विषय को प्राप्त करने में सक्षम होंगे I मल्टीपल एंट्री/ एग्जिट होने का विकल्प दिया गया I क्रेडिटस को स्टोर करने और डिग्री के लिए उपयोग करने की सुविधा दिया गया I आवश्यक विषयों, कौशलों और क्षमताओं का पाठ्यक्रम में समावेशन के पर ध्यान दिया गया I इस शिक्षा नीति समग्र विकास (मानसिक,भावात्मक और क्रियात्मक) की बात करती है I पर्यावरण के साथ अवधारणाओं का जुड़ाव स्थापित करने के लिए भी कहेता है I छात्रों का मूल्यांकन के लिए विभिन्न तरीकों का उपयोग (रोल प्ले, पोर्टफोलियों आदि) करके गतिविधियों द्वारा करने पर बल दिया गया I

शिक्षार्थियों के अद्वितीय क्षमताओं को प्रतिबिंबित करने में शिक्षक का हाथ रहता है I सुगठित व्यक्तित्व, पूर्ण चरित्र निर्माण के लिए अपना प्रयास के साथ शिक्षक और शिक्षा आवश्यक है I अतः कहा जा सकता है चरित्र निर्माण में शिक्षक – शिक्षा परिपूरक है I

****

संदर्भ सूची :-

1. स्वामी हर्षानन्द ,विद्यार्थी- शक्ति कितनी उपयोगी , पृ.-८
2. स्वामी हर्षानन्द ,विद्यार्थी- शक्ति कितनी उपयोगी , पृ.-८
3. पी.डी. पाठक , भारतीय शिक्षा और उसकी समस्याएँ ,पृ.-३३४
4. पी.डी. पाठक , भारतीय शिक्षा और उसकी समस्याएँ ,पृ.-३३५

अकेलेपन का सौंदर्यशास्त्र: समकालीन हिंदी कविता में आधुनिक मनुष्य की आंतरिक दुनिया

डॉ.सलीजा ए पी
असिस्टंट प्रोफेसर
PG & Research department of Hindi
Govt.arts &science College, Kozhikode, keralam

प्रस्तावना: मानव सभ्यता के विकास के साथ-साथ मनुष्य की संवेदनाएँ और उसके अनुभव भी निरंतर बदलते रहे हैं। आधुनिक समय में विज्ञान, तकनीक, शहरीकरण और वैश्वीकरण ने मनुष्य के जीवन को अभूतपूर्व सुविधाएँ तो दी हैं, किंतु इसके साथ ही एक गहरा मानसिक और भावनात्मक संकट भी उत्पन्न किया है। इस संकट का एक प्रमुख रूप है—अकेलापन। आज का मनुष्य भीड़ में रहते हुए भी भीतर से अकेला होता जा रहा है। परिवारों का विघटन, संबंधों का औपचारिक होना, सामाजिक प्रतिस्पर्धा और डिजिटल जीवन शैली ने मनुष्य के भीतर एक ऐसी रिक्तता पैदा की है जो उसकी आत्मा को निरंतर कचोटती रहती है।

साहित्य, विशेष रूप से कविता, हमेशा से मनुष्य की अंतरतम अनुभूतियों की अभिव्यक्ति का माध्यम रही है। समकालीन हिंदी कविता में आधुनिक मनुष्य के इसी अकेलेपन, उसकी आंतरिक बेचैनी और उसके आत्मिक संघर्ष का गहन चित्रण मिलता है। यह अकेलापन केवल दुख या पीड़ा का अनुभव नहीं है, बल्कि कई बार यह एक रचनात्मक और चिंतनशील स्थिति भी बन जाता है। इसी कारण समकालीन कवियों ने अकेलेपन को केवल एक नकारात्मक अनुभव के रूप में नहीं, बल्कि एक सौंदर्यात्मक और दार्शनिक अनुभव के रूप में भी प्रस्तुत किया है।

इस लेख का उद्देश्य यह समझना है कि समकालीन हिंदी कविता में अकेलेपन का सौंदर्यशास्त्र किस प्रकार निर्मित होता है और आधुनिक मनुष्य की आंतरिक दुनिया को किस प्रकार व्यक्त करता है।

आधुनिक जीवन और अकेलेपन की अनुभूति

आधुनिक जीवन की गति अत्यंत तीव्र हो चुकी है। महानगरों की चकाचौंध, आर्थिक प्रतिस्पर्धा और उपभोक्तावादी संस्कृति ने मनुष्य को निरंतर व्यस्त और चिंतित बना दिया है। आज व्यक्ति के पास भौतिक संसाधनों की कमी नहीं है, परंतु भावनात्मक संबंधों की गर्माहट धीरे-धीरे कम होती जा रही है। पहले संयुक्त परिवारों और सामुदायिक जीवन के कारण मनुष्य अकेलेपन से अपेक्षाकृत दूर था। परिवार, पड़ोस और सामाजिक संबंध उसके जीवन को एक प्रकार की स्थिरता और आत्मीयता प्रदान करते थे। किंतु आधुनिक शहरी जीवन में यह सामूहिकता टूटने लगी है। व्यक्ति अब एक छोटे से फ्लैट में सीमित जीवन जीता है, जहाँ उसके पास समय भी कम है और संवाद के अवसर भी सीमित हैं।

डिजिटल युग ने इस स्थिति को और जटिल बना दिया है। सोशल मीडिया और आभासी संवाद ने लोगों को बाहरी रूप से जोड़ तो दिया है, परंतु वास्तविक मानवीय संबंधों की गहराई कहीं-न-कहीं कम होती जा रही है। परिणामस्वरूप आधुनिक मनुष्य के भीतर एक गहरी आंतरिक रिक्तता पैदा हो रही है। समकालीन हिंदी कवियों ने इस बदलती सामाजिक संरचना और मानसिक स्थिति को बड़ी सूक्ष्मता से पहचाना है। उनकी कविताओं में आधुनिक जीवन की भागदौड़, मनुष्य की थकान, संबंधों की दूरी और अकेलेपन की पीड़ा बार-बार सामने आती है।

अकेलेपन का सौंदर्यशास्त्र : एक अवधारणा

सामान्यतः अकेलापन एक नकारात्मक अनुभव माना जाता है, क्योंकि यह मनुष्य को दुःख, निराशा और असुरक्षा की भावना से भर देता है। किंतु साहित्य में अकेलापन केवल पीड़ा का अनुभव नहीं होता